भारत में पूर्व औपनिवेशिक से उत्तर औपनिवेशिक काल तक पत्रकारिता के बदलते आयाम : (मिथिलांचल के विशेष संदर्भ में)

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वर नगर, दरभंगा

के

समाज विज्ञान संकाय (इतिहास)

में

पी-एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

प्रस्तावित शोध-प्रबन्ध की रुपरेखा

2021-2022

शोध पर्यवेक्षक
डॉ. नेहा कुमारी जायसवाल
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
महिला महाविद्यालय,समस्तीपुर
ल.ना.मि.वि, दरभंगा

शोधार्थी
मनीष कुमार
इतिहास विभाग
ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा

Scanned with OKEN Scanner

शीर्षक

भारत में पूर्व औपनिवेशिक से उत्तर औपनिवेशिक काल तक पत्रकारिता के बदलते आयाम: (मिथिलांचल के विशेष संदर्भ में)

शोध समस्या

विश्व में, भारतीय पत्रकारिता के स्तर में गिरावट के कारणों का पता लगाना तथा इसमें सुधार की संभावनाओं को रेखांकित करना।

प्रस्तावना

विश्व में पत्रकारिता का आरंभ सन् 131 -59 ईस्वी पूर्व रोम में हुआ था। पहला दैनिक समाचार पत्र निकालने का श्रेय जूलियस सीजर को दिया जाता है। उनके पहले समाचार पत्र का नाम था "Acta Diurna"(एक्टा डाइएर्ना), जिसका अर्थ है; दिन की घटनाएं।

भारत में पत्रकारिता का आरंभ:

भारत में समाचार पत्रों का इतिहास,यूरोपीय लोगों के भारत में प्रवेश के साथ ही आरंभ होता है। सर्वप्रथम भारत में प्रिंटिंग प्रेस लाने का श्रेय पुर्तगालियों को दिया जाता है। 1557 ईस्वी में गोवा के कुछ पादरी लोगों ने भारत की पहली पुस्तक छापी।छापे की पहली मशीन भारत में 1674 में पहुंचायी गई थी।

1684 ईस्वी में,अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी ने भी भारत की पहली पुस्तक की छपाई की थी। 1684 ईस्वी में ही कंपनी ने भारत में प्रथम प्रिंटिंग प्रेस (मुद्रणालय) की स्थापना की।

Scanned with OKEN Scanner

भारत का सबसे पहला अखबार, 29 जनवरी 1780 में कलकत्ता से शुरू हुआ। जेम्स अगस्टस हिक्की का अखबार 'हिक्की', "द बंगाल गजट "और "दि ओरिजिनल कैलकटा जनरल एडवरटाइजर् "था।

बर्किंघम ही वह पहला प्रकाशक था, जिसने प्रेस को जनता के प्रतिबिंब के स्वरूप में प्रस्तुत किया। प्रेस का आधुनिक रूप जेम्स सिल्क बर्किंघम का ही दिया हुआ है। हिक्की तथा बर्किंघम का पत्रकारिता के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है।

30 मे 1826 ईस्वी में कानपुर निवासी पंडित युगल किशोर शुक्ल ने कोलकाता से उदंत मार्तंड नाम से हिंदी के प्रथम समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया। इस दिन को पत्रकारिता के क्षेत्र में पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

मैथिली पत्रकारिता का इतिहास

मैथिली में पत्रकारिता का अपना गौरवशाली इतिहास हैं। हित साधन से लेकर मिथिला आवाज तक की अपनी विशेषता और विविधता रही है। पंडित चंद्रनाथ मिश्र "अमर" की "मैथिली पत्रकारिता का इतिहास",और डॉ योगानंद झा की"मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष", के साथ साथ विजय भास्कर द्वारा लिखित "बिहार में पत्रकारिता का इतिहास" इस विषय में उल्लेखनीय संदर्भ स्रोत है।
सबसे पहले मैथिली हितसाधन का प्रकाशन मासिक पत्र के रूप में 1905 में,जयपुर में हुआ। 1908 वह वर्ष है;जब मिथिला मिहिर ने प्रकाशन की दुनिया में दस्तक दी।

1911 से साप्ताहिक मिथिला मिहिर का प्रकाशन शुरू हो गया। यह दरभंगा महाराज की मिल्कियत थी। 1960 में यह सचित्र साप्ताहिक के रूप में सामने आया। इसके संपादकों में पंडित विष्णुकांत शास्त्री (1908-12), महामहोपाध्याय परमेश्वर झा,जगदीश प्रसाद व अन्य शामिल थे। मिथिला प्रभा अगस्त 1920 से दिसंबर 1924 तक चली। और मैथिल प्रभाकर अक्टूबर 1929 से दिसंबर 1930 तक।

Scanned with OKEN Scanner

1929 में पंडित कामेश्वर कुमार और भोला लाल दास ने मिथिला नाम की साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। और इसके शिल्प में सामाजिक संस्कृत विषय भी शामिल किए। इसका प्रकाशन लहेरिया सराय, दरभंगा विद्यापति प्रेस से शुरू हुआ।

1780 से 1800 के दौरान प्रकाशित अखबार

*कलकत्ता गजट (1784)।
*द बंगाल जनरल (1785)।
*1785 में अंग्रेजी भाषा की मद्रास कुरियर।
*मद्रास गजट 1795 में और इंडिया हेराल्ड 1796 में।
*मुंबई कुरियर 1789 में।
*मुंबई में पहला अखबार मुंबई हेराल्ड 1789 में।
*1791 में बॉम्बे गजट।

1800 से 1890 के बीच प्रकाशित अखबार

*1818 ई में मार्शमैन के नेतृत्व में बंगाली भाषा में पहले मासिक पत्र दिग्दर्शन का प्रकाशन किया गया।
*राम मोहन रॉय ने पहले साप्ताहिक समाचार पत्र संवाद कौमुदी (बुद्धि का चांद) 1819 में, समाचार चंद्रिका का मार्च 1822 में, 12 अप्रैल, 1822 में फारसी भाषा में मिरात-उल- अखबार एवं अंग्रेजी भाषा में ब्रह्मनिकल मैगजीन का प्रकाशन किया।
*1822 में गुजराती और अंग्रेजी भाषा में साप्ताहिक "मुंबई समाचार"पत्र प्रकाशित होने लगा ,जो आज भी दैनिक रूप में विद्यमान है। एवं एशिया का सबसे पुराना लगातार प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र है। इसके संस्थापक फरदुनजी मार्ज़बान थे।
*1830 में राजा राममोहन राय ने द्वारकानाथ टैगोर एवं प्रसन्न कुमार टैगोर के साथ हिंदी साप्ताहिक "बंगदूत"का कोलकाता में प्रकाशन शुरू किया। यह समाचार पत्र

Scanned with OKEN Scanner

अंग्रेजी,बांग्ला,हिंदी और फारसी में भी निकलता था।

बिहार में पत्रकारिता

*1875 में,बिहार के पहले अंग्रेजी अखबार, द बिहार हेराल्ड की शुरुआत गुरु प्रसाद सेन ने की थी।

*1881 में पटना से 'इंडियन क्रॉनिकल' नामक समाचार पत्र प्रकाशित हुआ।

*राष्ट्रवादियों द्वारा, "द मदरलैंड"और "बिहार स्टैंडर्ड"का प्रकाशन 20वीं सदी की शुरुआत में हुआ।

*'द बिहारी' और 'द बिहार टाइम्स' दो ऐसे समाचार पत्र थे, जो बिहार को एक अलग प्रांत बनाने की मांग में सक्रिय भूमिका में थे।

*"इन बिहार टाइम्स" की स्थापना पटना में साप्ताहिक रूप में 1903 में हुई थी। जबकि 1906 में इसे भागलपुर से प्रकाशित होने वाले "बिहार समाचार" से जोड़कर "बिहारी"नाम दिया गया।

* 'द सर्चलाइट' 15 जुलाई, 1918 से "द बिहारी" के स्थान पर प्रकाशित होना शुरू हुआ। इसके पहले संपादक सैयद हैदर हुसैन थे। यह समाचार पत्र सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन में राष्ट्रवादियों के प्रवक्ता के रूप में भूमिका निभाई।

* 1924 में, बिहार के पहले भारतीय मुख्यमंत्री मोहम्मद यूनुस ने "द पटना टाइम्स" का प्रकाशन शुरू किया, जो 1944 तक चलता रहा।

* 1931 में, दरभंगा के महाराज कामेश्वर सिंह ने द इंडियन नेशन की स्थापना की।

* "टाइम्स ऑफ़ इंडिया" के पटना संस्करण का प्रकाशन भी मई 1986 से शुरू हुआ।

*बिहार का पहला दैनिक हिंदी समाचार पत्र "बिहार बंधु" था। जो 1874 में पटना से प्रकाशित हुआ। इसकी स्थापना कोलकाता में 1872 में केशव राम भट्ट के द्वारा किया गया।

*बिहार का पहला उर्दू दैनिक अखबार आरा से नूरुल अनवर शीर्षक के नाम से 1876 में प्रकाशित हुआ। जिसका मालिकाना हक मोहम्मद हाशिम के पास था। सदा -ए-

Scanned with OKEN Scanner

आम स्वतंत्रता संग्राम के उर्दू अखबारों में सबसे पुराना था।

*1948 में दरभंगा से एक साहित्यिक पत्रिका "किरण"का प्रकाशन शुरू हुआ।

बिहार में प्रकाशित प्रमुख हिंदी पत्रिकाएं

*क्षत्रिय पत्रिका (1881, मासिक),

*बाल (1926,मासिक),

*ज्योत्सना (1948, मासिक),

*जनता की राय (1981, मासिक),

*नई शिक्षा (1990, मासिक)

बिहार में प्रकाशित प्रमुख संस्कृत पत्रिकाएं

*छात्र (1878, मासिक)

*संस्कृत संजीवनम (1940,त्रैमासिक)

*भारती (1988, मासिक)

बिहार में प्रकाशित प्रमुख साप्ताहिक पत्रिकाएं

*अलपंच (उर्दू, 1855),पटना

*पीयूष प्रवाह (हिंदी,1886),भागलपुर

*तरुण भारत (हिंदी, 1921), पटना

*हुंकार (हिंदी,1940),पटना

*पटना टाइम्स (अंग्रेजी),पटना

*जनादेश (1990), पटना

Scanned with OKEN Scanner

पूर्व अध्ययन की समीक्षा

1. विजय भास्कर की पुस्तक "बिहार में पत्रकारिता का इतिहास" बहुत ही सरल भाषा में लिखी हुई है।जिसका अध्ययन शोध समस्या के लिए बहुत ही उपयोगी साबित होंगे।

2. पीसी राय चौधरी की "बिहार जिला गजेटियर",दरभंगा पत्रकारिता के क्षेत्र में विभिन्न आयामों का मार्गदर्शन करेगी। जिससे हमारा शोध अध्ययन उपयोगी साबित होगा।

3. "उर्दू अखबारों ने रखी,बिहार में पत्रकारिता के नींव", के लेखक संजय कुमार जी ने पत्रकारिता के आरंभिक चरण को बिहार के विशेष संदर्भ में बारीकी से संकलित करने का प्रयास किया है। जो अध्ययन के लिए सहज रूप से उपलब्ध हो सका है।

अध्ययन का उद्देश्य,महत्व एवं प्रासंगिकता

अध्ययन का उद्देश्य पूर्व औपनिवेशिक काल से उत्तर औपनिवेशिक काल में हुई पत्रकारिता के विभिन्न बदलते आयाम को तथा उसके सफलता व सफलता को समझने में मदद मिल सके । जिससे आने वाले सामाजिक एवं राजनीतिक बदलाव को भविष्य में प्रतिस्थापित कर सके।

अध्ययन का महत्व यह होगा ;कि अब तक हुए पत्रकारिता में विभिन्न भाषाओं के क्षेत्र ,आर्थिक समस्या तथा राजनीतिक दबाव को समझा जाएगा। जिससे पत्रकारिता स्वतंत्र रूप से अपने कार्यों को संपादित कर सके।

अध्ययन की प्रासंगिकता यह होगी।कि पूर्व में हमारे पथ प्रदर्शक पत्रकार नैतिकता,दृढ़

Scanned with OKEN Scanner

इच्छा शक्ति के बल पर समाज के विभिन्न पहलुओं को निर्भक्त निर्भीकता से राज्य व देश भर में मुद्दे उठाएं जिससे समाज में नवीन बदलाव आ सका आज भी पत्रकारिता का प्रमुख कर्तव्य पूर्व पद बनी रहे यही इसकी प्रासंगिकता होगी।

अध्ययन का क्षेत्र

शोध समस्या के अध्ययन का क्षेत्र राष्ट्रीय स्तर पर सीमित, राज्य के स्तर पर व्यापक तथा मिथिलांचल के क्षेत्र में संपूर्णता से रहेगी।

अध्ययन पद्धति

1. शोध समस्या का अध्ययन पद्धति ऐतिहासिक ,साक्षात्कार, लेख,सरकारी रिपोर्ट, मीडिया, तथा प्रिंट इलेक्ट्रानिक माध्यम से प्राप्त आंकड़ों का एकत्रीकरण, अवलोकन एवं निरीक्षण कर उपयोग किया जाएगा।

2. उच्च अधिकारियों के व्यक्तिगत डायरी, संग्रहित अखबार, पैम्फलेट व तात्कालिक सरकारी आदेशों का संग्रहण कर निरीक्षक व अध्ययन किया जाएगा।

स्रोत सामग्री की उपलब्धता

1.महाधिराज कामेश्वर सिंह इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंस एंड रिसर्च लाइब्रेरी, दरभंगा
2.केंद्रीय पुस्तकालय, दरभंगा
3. लक्ष्मेश्वर पब्लिक लाइब्रेरी,दरभंगा
4. लक्ष्मेश्वर सिंह महाराज अभिलेखागार,दरभंगा
5. जिला दरभंगा गजेटियर, दरभंगा
6. ख़ुदा बख़्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना
7. केंद्रीय पुस्तकालय, नई दिल्ली

Scanned with OKEN Scanner

8. सयाजी राव गायकवाड़ केंद्रीय ग्रंथालय,बीएचयू

परिकल्पना

भारतीय पत्रकारिता में हो रहे बदलाव के कारण राजनीतिक, सामाजिक,आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक स्तर का पता लगाना तथा इसमें सुधार एवं भविष्य की चुनौतियों से कैसे निपटा जाए; इसकी खोज करना।

मिथिलांचल क्षेत्र के विभिन्न भाषाओं के समाचार पत्रों के पतन का पता लगाना तथा इसके पुनरुद्धार का मार्ग ढूंढना।

कार्य योजना

1. भूमिका
2. पत्रकारिता का इतिहास
3. बिहार के मिथिलांचल क्षेत्र के विभिन्न अखबारों का इतिहास
4. पत्रकारिता से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व नैतिक बदलाव
5. पत्रकारिता में मिथिलांचल की महिलाओं की भूमिका
6. निष्कर्ष
7. संदर्भ ग्रंथ सूची

ग्रंथ सूची

<u>प्राथमिक स्रोत</u>

1. बिहार जिला गजेटियर ,दरभंगा -पी.सी.राय चौधरी
2. जर्नलिज्म इन बिहार (ए सप्लीमेंट ऑफ बिहार स्टेट गजेटियर) -एन.कुमार
3. इमेज ऑफ़ पटना (ए सप्लीमेंट ऑफ पटना जिला गजेटियर)1971 -एन. कुमार

Scanned with OKEN Scanner

द्वितीयक स्रोत

1. बिहार में पत्रकारिता का इतिहास- विजय भास्कर
2. पत्र,पत्रकार और सरकार- काशीनाथ गोविंद जोगलेकर
3. आधुनिक पत्रकारिता -डॉ अर्जुन तिवारी
4. 100 एंड 30 इयर्स ऑफ़ इंडियन जर्नलिज्म -बी.एल. ओझा
5. हिंदी पत्र-पत्रिका का संग्रहालय,(1826 -1925) -बी.ओझा
6. हिस्ट्री ऑफ इंडियन जर्नलिज्म -जय नटराजन
7. पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य -जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी

शोध पर्यवेक्षक
(डॉ. नेहा कुमारी जायसवाल)
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
महिला महाविद्यालय,समस्तीपुर
ल.ना.मि.वि, दरभंगा

शोधार्थी
मनीष कुमार
इतिहास विभाग
ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर,
दरभंगा

Scanned with OKEN Scanner